ISSN 3139-3284 (ONLINE)

VOL. 1

A PEER-REVIEWED · MULTIDISCIPLINARY · MULTILINGUAL JOURNAL

ESTD. 2026

Knowledge Beyond Boundaries...

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL

S N A J

Open Access · Online · Biannual · Double-Blind Peer Reviewed
Crossref Indexed DOI · Multidisciplinary · Multilingual

VOLUME 1 · ISSUE 1

JANUARY – JUNE 2026

CHIEF EDITOR

Dr. Mohammad Zahid

www.snaj.org.in

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL

 ISSN 3139-3284 (Online)

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL
Volume 1 · Issue 1 · January – June 2026

FOREWORD

It is with immense pride and a deep sense of purpose that I present the inaugural issue of the Shibli National Academic Journal (SNAJ) to the global community of scholars, researchers, and students. Named in reverence to the towering legacy of Allama Shibli Nomani — a scholar whose intellectual contributions transcended boundaries of language, discipline, and geography — this journal aspires to carry forward that same spirit of rigorous, cross-cultural inquiry.

SNAJ was conceived from a simple but pressing conviction: that meaningful scholarship should not be confined by the language in which it is written, nor by the discipline from which it emerges. India's intellectual tradition has long thrived at the confluence of languages — English, Hindi, and Urdu among them — and it is this confluence that our journal seeks to honour. By welcoming original research across the humanities, social sciences, education, and emerging interdisciplinary , multilingual fields, we hope to build a genuinely inclusive platform for academic dialogue.

As Chief Editor, I have had the privilege of witnessing the dedication of our editorial board, reviewers, and contributors, whose collective commitment has shaped this first issue. Every article herein has passed through a rigorous double-blind peer review/ indexed process, and each is assigned a Crossref indexing, registered DOI, reflecting our unwavering commitment to academic integrity, originality, and permanence in the global research ecosystem.

I extend my heartfelt gratitude to our esteemed reviewers, editorial board members, and the scholars who entrusted us with their research. It is through their collective effort that this journal has moved from vision to reality. I also invite researchers, academicians, and students from across disciplines and linguistic traditions to consider SNAJ as a home for their scholarship in the issues to come.

It is my sincere hope that this journal will serve not merely as a repository of research, but as a living, evolving conversation — one that bridges languages, disciplines, and generations of scholars in pursuit of knowledge.

With warm regards,

Dr. Mohammad Zahid
Chief Editor
Shibli National Academic Journal (SNAJ)

Shibli National Academic Journal *ISSN- 3139 - 3284*
Vol. No. 1, Issue No. 1, Jan- Jun 2026
Received Date: 28/01/2026 Accepted Date: 26/05/2026 Publication Date: 30/06/2026 DOI

आत्मान्वेषण, मौन और सत्य की खोज का काव्य : तुम्हारी चुप्पियाँ एक घोषणा पत्र हैं

डॉ. सुशील द्विवेदी
ORCID ID: 0009-0009-8793-1206

यह सामान्य धारणा है कि आप जीवन पर्यंत इस बात पर पश्चाताप कर सकते हैं कि आपने गलत चीज चुनी है इसलिए नहीं, बल्कि इसलिए कि आपको स्वयं को प्रमाणित करने का कोई अवसर नहीं मिला। स्वयं को प्रमाणित करने के लिए,जानने के लिए आत्मावलोकन ही एकमात्र साधन है, अन्य साधन इसके जानने का उपक्रम भर हो सकता है। कवि, कलाकार, तपस्वी आत्मान्वेषण ही करते हैं। यह आत्मान्वेषण बाह्य जगत से आंतरिक जगत की यात्रा है। जब इस दृश्यमान विराट जगत का शोर धीरे-धीरे आंतरिक जगत की ओर सूक्ष्मगत और शांत होता जाता है, तब कलाकार का आभायांतर धीरे-धीरे विराट होता जाता है। यही बाह्य जगत से आंतरिक जगत की यात्रा है। गीता में अर्जुन की यही यात्रा है, यही कबीर की यात्रा है, यही तुलसी की यात्रा है, यही अज्ञेय, निर्मल की यात्रा है, यही महर्षि रमण की यात्रा है, यही हरीश अरोड़ा की यात्रा है।

महर्षि रमण के अनुसार –'यथार्थ में जो अस्तित्ववान है, वह केवल आत्म स्वरुप है। जीव, जगत, ईश्वर इसमें मोती में चाँदी के आभास की भांति कल्पित प्रतीति हैं। ये तीनों एक ही समय प्रगट होकर एक ही समय लुप्त होते हैं। जिस स्थान पर मैं का किंचित मात्र विचार नहीं होता, वहाँ स्वरुप है, वही मौन है, स्वरुप स्वमेव जगत है, स्वरुप स्वमेव 'मैं' है, स्वरुप स्वमेव ईश्वर है, सब कुछ शिव स्वरुप है'।[1]

कवि ने लिखा है –

'प्रेम माँगता नहीं-
वो बस ठहरता है,
और प्रतीक्षा करता है –
शब्दों से परे,
विचार से भी आगे...
मौन में समर्पित होकर।'[2]

महर्षि रमण और कवि हरीश ने जिस तादात्म और एकाकार होने की बात कही है, उसी तादाम्य-भूमि से सृष्टि का अनाहत नाद आरम्भ होता है, वहीं से बीज और बीज से धीरे -धीरे समस्त सृष्टि। ओशो ने शिव सूत्र में लिखा 'अभी तुम बीज की भांति हो। लेकिन तुमने इसे समझा नहीं; तुम बाहर खोज रहे हो। और जब तक तुम बाहर खोजते रहोगे. तुम्हारा बीज भीतर ही पड़ा रहेगा, अंकुरित न होगा। क्योंकि बीज के लिए वैसे ही पानी चाहिए, भूमि चाहिए, प्रकाश चाहिए, प्रेम चाहिए जैसे कि छोटे बच्चे को। जब तुम भीतर आँख मोड़ोगे, जब तुम्हारा ध्यान भीतर बरसेगा और तुम्हारी ऊर्जा भीतर की तरफ मुड़ेगी, तभी बीज को प्राण मिलेंगे; तभी बीज जीवंत होगा, अंकुरित होगा।'[3]

कवि का सत्य के अन्वेषण का आग्रह अवश्य है । यह अन्वेषण तथागत के आर्य सत्य जैसा है। यह अन्वेषण दुख और यंत्रणाओं से परे अहम् के विलीन होते जाने और सत्य को जान लेने में है। कई बार जानना बिल्कुल जानना नहीं होता है। जो चीजें सहज और सरल दिखती हैं, कई बार वे उतनी ही गूढ़ और कठिन होती हैं। कवि कुमार अनुपम के शब्दों में "*बहुत सरल लगते वाक्य, अक्सर सरल नहीं होते।*"[4]

हरीश जी स्वयं शिवत्व, योग और समाधि साधकों से परे तथागत के उस सत्य को स्वीकार करते हैं जो असंसारी होते हुए भी संसारी है, जो अविश्वास, अनास्था, संशय, अविद्या से परे केवल सत्य की स्वीकृति है। यही सत्य ही कवि का मौन है। तथागत का मौन है - पूर्ण मौन।

कवि ने लिखा है-

'सत्य वह नहीं है
जो शास्त्रों में लिखा गया है
वह तो वह है
जो तुम्हारे भीतर एक पत्थर की तरह
चुप बैठा है
जिसे देखो वह शून्य है
जिसे देखो वह आलोक है।'[5]

यहाँ सत्य और पत्थर, शून्य और आलोक जैसे शब्दों की व्यंजना सरल अवश्य लगती है। भारतीय साहित्य में पत्थर के अनावृत होने की होने कथाएँ अवश्य मिलती हैं । कवि का सत्य के बाहरी आवरण को समझने का रूपक कितना गहरा है, यह भारतीय साहित्य के पाषाण संबंधी काव्य कथाओं को पढ़ने के उपरांत ही समझा जा सकता है। कवि का यह रूपक पत्थर जैसे कठोर संरचना के भीतर प्राण के, आलोक के, आकाश के, जैसी ध्वनियों का द्योतक है । एक अर्थ में सत्य का कवच पाषाण की तरह कठोर है। यह कठोरता 'ह्वै हैं सिला सब चंद्रमुखी' की आकांक्षा, धूप, ताप, बरसात, झंझावात, अपमान और तिरस्कार जैसी कठोर उद्भावनाएँ सहते हुए अहिल्या हो जाने में है। अहिल्या सत्य है, आंतरिक है, आलोक है। पाषाण वह है जो अभी अभी मैंने कहा। अहिल्या का उद्धार केवल राम कर सकते हैं,कोई दूसरा नहीं। राम हम स्वयं हैं, हमीं तथागत हैं, हमीं पाषाण हैं, हमीं अहिल्या हैं, यह संसार इसी पाषाण और सत्य का युग्मनद है।

चित्रा मुद्गल जी के शब्दों में- 'हरीश की चुप्पियाँ दरअसल किसी एक की चुप्पी नहीं है, बल्कि वे एक स्त्री की, एक प्रेमी की, एक नागरिक की, एक प्रतिरोधरत आत्मा की और कभी कभी कविताओं में पसरते शब्दों की चुप्पियाँ - वे चुप्पियाँ जो हमारी पंपरागत संरचनाओं को तोड़ती हैं और नवगठित संवेदनशीलता की पुनर्स्थापना करती हैं।"[6]

किन्तु कवि हरीश का मौन रैखिक नहीं है। उसमें मौन की बहुस्तरीयता है, हर एक अधूरे वाक्य के बाद, पंक्तियों के बीच में -आकाश में, विराम चिन्हों, एक पूर्ण वाक्य के बाद, कविता के आरम्भिक अक्षर, अंतिम पदबंध के मध्य मौन का वितान विन्यस्त है। इनमें केवल रूपता नहीं है, अपितु मौन की वैविध्यता, संहिती और आवर्तन है। इसी के कारण कविता का लालित्य समकाल से भिन्न है। अपने व्याख्यान में, लीलाधर मंडलोई ने कहा है – *'समकालीन कविता में अधूरापन कविता का एक प्रमुख स्वर रहा है । इसी परम्परा में हरीश अरोड़ा की कविताएँ न केवल अधूरी इच्छाओं के एक कोलाज हैं बल्कि यह खोये हुए समय की गवाही देती हैं।'*[7]

यह खोया हुआ समय क्या है? क्या इसकी सुनिश्चित कोई व्याख्या हो सकती है या कविता जैसी अमूर्त विधा में सत्य, समय और दिक् की प्रमाणिकता पर विश्वास किया जा सकता है? *कविता में अद्यतन होना ही उसकी पहचान है वरना 'छितराई हुई भीड़ का कवि सिर्फ कविता लिखता है, समय को जीता नहीं है' - तटस्थ नहीं मैं* की भूमिका में यह स्वयं स्वीकार किया है ।

संग्रह जीवन की पारंपरिक संकल्पनाओं को मौन, प्रतीक्षा, स्मृति और सौम्यता के बिम्बों से पुनर्गढ़ता है। चुप्पियाँ यहाँ स्त्री की, प्रेमी की, नागरिक की और प्रतिरोधरत आत्मा की हैं। वे परंपरागत संरचनाओं को तोड़ती हैं और नवीन संवेदनशीलता स्थापित करती हैं। प्रेम को केवल दैहिक आकांक्षा नहीं, बल्कि राजनीतिक-सामाजिक प्रतिरोध का आधार बनाया गया है। कवि कहता है कि कविताएँ शब्दों से अधिक मौन की परछाइयों में जन्मी हैं। ये अनकहे, अधूरे संवाद, प्रतीक्षारत भावनाएँ हैं। संग्रह एक आवेग से नहीं, बल्कि वर्षों जमी चुप्पियों की परतों से बना है। दैनिक जीवन, प्रकृति, स्मृति और अस्तित्व के क्षणों पर केंद्रित कविताएँ-आर्ट फैकल्टी के गलियारों में, छत पर सूखती एक कहानी, सफेद कागज़ पर एक धब्बा, शब्द भी मार दिए जाते हैं। ये कविताएँ शहर, गाँव, नदी, घड़ी, लैंप-पोस्ट जैसे साधारण बिंबों से गहरी संवेदना उकेरती हैं। स्त्री-स्वर, प्रतीक्षा और आत्मसंवाद- शबरी की प्रतीक्षा,उर्वशी की प्रतीक्षा में ठहरा समय,कृष्ण जब बाँसुरी नहीं बजाते, द्रौपदी के अज्ञातवास में...अनसूया के आँचल में बसी स्त्री की आत्मा।यहाँ प्रेम राजनीतिक प्रतिरोध बनता है, स्त्री की चुप्पी सत्ता को कंपा देती है।

हरीश पुरुषार्थ चतुष्टय के कवि हैं । संयत, संयम, ताप और शांति से पुरुषार्थ चतुष्टय को बल मिलता है । स्त्री, पुरुष और सृष्टि इस चेतना के अविभाज्य हैं। इनमें से किसी एक की अनुपस्थिति न सृष्टि निर्मित कर सकती है और न स्वयं को। दर्बा मित्रा ने औपनिवेशिक विचार के विरुद्ध भारतीय स्त्री चेतना को स्वीकार किया है। उनका मानना है कि स्त्रियों के शोषण और पराधीनता विषयक अवधारणाएं औपनिवेशिक लेखकों द्वारा गढ़ी गई हैं। कवि हरीश इस औपनिवेशवादी तथ्य और तर्क से परिचित हैं। संग्रह में आठ कविताएँ भारतीय स्त्री पात्रों पर आधारित हैं, जिनमें से *सती अनुसूइया, शबरी, उर्वशी* आदि रेखांकित की जा सकती हैं । इनमें से सभी पात्र औपनिवेशिकता के प्रतिपक्ष खड़ी भारतीय स्त्री मन हैं। मेरे संज्ञान में सती अनुसुइया पर आधुनिक हिंदी में संभवतः लिखी गई यह पहली कविता है । सती अनुसूइया भगवान दत्तात्रेय (ब्रह्म,विष्णु और शिव की बाल छवि) की माँ के रूप में जाना जाता है। कवि हरीश को स्त्री की यह छवि अधिक ग्राह्य है। और हो भी क्यों ना ?

उर्वशी, इंद्राणी, मेनका जैसे चरित्रों पर कवि हृदय ठहरता अवश्य है, किंतु इन पात्रों को समझने जानने की कवि दृष्टि दिक्-काल सापेक्ष रही है। कवि की अपनी दृष्टि, अपना बोध और कवि-समय होता है। यही पाठक या आलोचक के लिए भी कहा जा सकता है। इस अर्थ में रचना कवि और आलोचक के बोध व समय के संस्पर्श से गुजरती है, ठहरती नहीं। उसकी अनवरत गतिशीलता उसके समय को अनंत, ग्राह्य और उदात्त बनाती है। धर्मवीर भारती ने लिए जो उर्वशी को काम-अध्यात्म यात्रा थी, वही हरीश के लिए प्रतीक्षा की, मातृत्व की । उर्वशी की मातृत्व ही उन्हें अन्य कवियों से अलग करती है-

'वह चली गई
पर समय वहीं रुक गया
जहाँ उसने अपना आँचल समेटा था.....
मैं देखता हूँ
कि उर्वशी तो नहीं
पर उसकी उपस्थिति
हर कोने से
धूप की रेखा-सी फूटती है।'[8]

कवि के लिए स्त्री महज देह नहीं है, बल्कि वह देह से परे स्वच्छंद, आत्मिक, पूर्ण और मातृत्व से परिपूर्ण है। वे स्त्री देह की उन बहसों के बरक्स जो यह समझते हैं कि

'देह नहीं होती है
एक दिन स्त्री
और उलट-पुलट जाती है
सारी दुनिया अचानक !'

बल्कि हरीश *'तन के भूगोल से परे स्त्री मन की गाँठें'* पढ़ने के पक्षधर हैं। उनके यहाँ स्त्री पात्रों से संवाद आत्मीय, अनाविल और रुई के फाहे की तरह हल्का, तितली के पंखों की तरह नर्म और बहुवर्णीय है। चित्रा जी ने ठीक ही लिखा है कि *'यह संवाद किसी वैमर्शिक नारे की तरह नहीं आता है बल्कि किसी साँझ के धुँधले उजास में, फूल की भीगी पंखुड़ी की तरह छू जाता है।'*[9] कवि का आत्मन दिल्ली विश्वविद्यालय के आर्ट्स फैकल्टी के गलियारे से निकलता है, जहाँ इतिहास और संवेदना, विस्मृत होती स्मृतियाँ महज़ तथ्य भर नहीं हैं, अपितु उनके भीतर विराट जीवन- सौन्दर्य बसंत की तरह आने के लिए व्याकुल है। उनके रेशे रेशे से परम्परा, संस्कृति और काल की अन्तःसलिला प्रवाहमान है। कवि हरीश के यहाँ 'घड़ी में टिका हुआ बेजान सेंकेण्ड'भी प्राणवान हो जाता है । पेड़ की उदासी प्रतिरोध पैदा करने लगती है। गाँव पुनर्संवाद चाहते हैं, शहर की दीवारें बंद बक्से की तरह लगने लगते हैं जिनमें घुटन नहीं, बल्कि स्मृति, प्रेम और आकांक्षा की स्वप्निल दुनिया है। कवि हरीश साईकिल पर सवार होकर गाँव की पगडण्डी से शहर के परे चले जाना चाहते हैं, लैम्पोस्ट उन्हें तथागत तक पहुँचने का रास्ता दिखाते हैं। अस्तु, हरीश अरोड़ा के कविता संग्रह 'तुम्हारी चुप्पियाँ एक घोषणापत्र हैं' की कविताएँ बाह्य जगत से आंतरिक जगत की यात्रा करते हुए आत्मान्वेषण, मौन और सत्य की खोज का काव्य हैं। इनमें मौन, प्रतीक्षा, स्मृति और स्त्री-चेतना के माध्यम से समकालीन जीवन

की संवेदनाएँ व्यक्त होती हैं। कवि साधारण बिंबों और भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों के जरिए प्रेम, प्रतिरोध और मानवीय चेतना को नए अर्थ देते हैं। इस प्रकार उनकी कविता समकालीन हिंदी कविता में एक विशिष्ट और संवेदनशील हस्तक्षेप है।

संदर्भ

1. रमण , महर्षि (2010), मैं कौन हूँ, श्री रमणाश्रमम, तिरुवण्णामले, पृष्ठ 18
2. अरोड़ा, हरीश (2025), 'शबरी की प्रतीक्षा', तुम्हारी चुप्पियाँ एक घोषणापत्र हैं, दिल्ली : अद्विक पब्लिकेशन, पृष्ठ 109
3. ओशो (2024), शिव सूत्र,146, डायमंड बुक्स, दिल्ली, पृष्ठ 63
4. अनुपम, कुमार (200), बिस्कोहार, पृष्ठ 13
5. अरोड़ा, हरीश (2025), '*तथागत का सत्य*', तुम्हारी चुप्पियाँ एक घोषणापत्र हैं, दिल्ली : अद्विक पब्लिकेशन, पृष्ठ *23-24*
6. मुद्गल, चित्रा (2025), '*कवि की चुप्पी, समय की सबसे मुखर घोषणा है*', तुम्हारी चुप्पियाँ एक घोषणापत्र हैं, दिल्ली : अद्विक पब्लिकेशन, पृष्ठ 8
7. मंडलोई, लीलाधर (2025), वीर अर्जुन, पृष्ठ 4
8. अरोड़ा, हरीश (2025), '*उर्वशी की प्रतीक्षा में ठहरा समय*', तुम्हारी चुप्पियाँ एक घोषणापत्र हैं, दिल्ली : अद्विक पब्लिकेशन, पृष्ठ *110-111*
9. मुद्गल, चित्रा (2025), '*कवि की चुप्पी, समय की सबसे मुखर घोषणा है*', तुम्हारी चुप्पियाँ एक घोषणापत्र हैं, दिल्ली : अद्विक पब्लिकेशन, पृष्ठ 8

ISSN 3139-3284 (ONLINE)

Knowledge Beyond Boundaries...

ABOUT THE JOURNAL

The Shibli National Academic Journal (SNAJ) is an international, multidisciplinary and multilingual research publication dedicated to advancing rigorous scholarship across the humanities, social sciences, education, language and emerging interdisciplinary fields. Published biannually in fully open access online format, SNAJ upholds a double-blind peer review process to ensure the highest standards of academic integrity, originality and scholarly merit. Every article published in the journal is assigned a Crossref-registered Digital Object Identifier (DOI), ensuring permanent discoverability and citation traceability in the global research ecosystem.

AIMS & SCOPE

SNAJ welcomes original research articles, review papers, case studies and scholarly notes in English, Hindi and Urdu, fostering cross-linguistic and cross-cultural academic dialogue while maintaining internationally recognised standards of research publishing.

ISSN 3139-3284 (Online) · Crossref DOI Indexed

chiefeditor@snaj.org.in

www.snaj.org.in

© SNAJ PUBLICATIONS — ALL RIGHTS RESERVED